भारत की प्रगति में बाधक भ्रष्टाचार

आकाश दीप
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ

डॉ0 सीमा पंवार
आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र ''भारत की प्रगति में बाधक भ्रष्टाचार'' के लिए सन्दर्भित है। भ्रष्टाचार प्रशासन की एक प्रमुख समस्या बन गया है। राजनीतिक और प्रशासनिक दोनों ही स्तरों पर इस समस्या ने गम्भीर रूप धारण कर लिया है। इस समस्या के कारण जनसाधारण में लोकतंत्र के प्रति वितृष्णा और निराशा की भावना घर करने लगी है। भ्रष्टाचार देश में लगी वह दीमक है जो अन्दर ही अन्दर देश को खोखला करे जा रहा है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व का आईना है जो यह दिखाता है कि व्यक्ति लोभ, असंतुष्टि, आदत और मनसा जैसे विकारों की वजह से कैसे मौके का फायदा उठा सकता है। इस प्रकार के भ्रष्टाचार से समाज को बहुत अधिक क्षति पहुंचती है। हम सभी को समाज का जिम्मेदार नागरिक होने के नाते यह प्रण लेना चाहिए कि न भ्रष्टाचार करें और न करने दें। जिससे देश का प्रत्येक वर्ग विकास की ओर अग्रसर हो।

वर्तमान समय में भ्रष्टाचार प्रत्येक क्षेत्र में देश की प्रगति में, बाधक बना हुआ है जिसे सुखद नहीं कहा जा सकता है जिसके कारण देश प्रगति के शिखर पर नहीं पहुंच पा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र समाज पर भ्रष्टाचार के दुष्प्रभावों एवं भ्रष्टाचार को समाप्त करने के संभव तरीकों को जानने का एक प्रयास है, जो निश्चित रूप से नीति निर्माताओं एवं प्रत्येक वर्ग के नागरिकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। शोध पत्र में भ्रष्टाचार समाप्ति हेतु सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का भी आंकलन किया गया है। उनकी क्रियान्वियन में आई कमियों को इंगित करने करते हुए उनके सफल परिणाम की प्राप्ति हेतु सुझाव भी शोध पत्र में उल्लिखित किए गये हैं।

बीज शब्द– भ्रष्टाचार, बाधक, रिश्वत, पार्टी, घोटाले, रिपोर्ट।

भूमिका

भारत में भ्रष्टाचार की समस्या नई नहीं है। वर्तमान में तो प्रशासन का कोई भी क्षेत्र भ्रष्टाचारी गतिविधियों से अछूता नहीं है। प्रशासनिक कार्यालयों में पद विशेष पर बैठे व्यक्तियों में से अधिकांश अपने पद का लाभ उठाकर गबन, रिश्वतखोरी, काला बाजारी आदि कार्यों में लिप्त रहते हैं इतना ही नहीं, विभिन्न स्तरों पर राजनीतिक नेतृत्व एवं आम जनता की भी भ्रष्टाचारी कार्यों में संलिप्तता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। अंततः इसके दुष्प्रभाव भारत की प्रगति पर देखने को मिलते हैं, जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के 75 वर्ष पूर्ण करने के पश्चात् भी अविकसित देशों की श्रेणी से अपने को बाहर नहीं निकाल पाया है। गत कई दशकों से भ्रष्टाचार भारत को दीमक की तरह खोखला कर रहा है जिसका दुष्प्रभाव देश के विकास पर तो पड़ता ही है आम जनता भी सरकार द्वारा प्रदत्त योजनाओं के लाभों से वंचित रह जाती है।

वर्तमान में भारत में कालाबाजारी अर्थात जानबूझकर चीजों के दाम बढ़ाना, अपने स्वार्थ के लिए चिकित्सा जैसे क्षेत्र में भी जानबूझकर गलत ऑपरेशन करके पैसे ऐठना, हर काम पैसे लेकर करना, किसी भी सामान को सस्ता लाकर महंगे में बेचना, घूस लेना, टैक्स चोरी करना, ब्लैक मेल करना, परीक्षार्थी का गलत मूल्यांकन करना, हफ्ता वसूली, न्यायाधीशों द्वारा पक्षपातपूर्ण निर्णय, वोट के लिए पैसे और शराब बांटना, परीक्षा में नकल, चुनाव धांधली, उच्च पद के लिए भाई–भतीजावाद, पैसे देकर रिपोर्ट छापना आदि भ्रष्टाचार पूर्व कृत्य सरकारी कार्यालय, गैर सरकारी संस्थान एवं राजनीति में सामान्य हैं। प्रशासनिक क्षेत्र में तो इन्हें काम कराने हेतु सुविधा शुल्क का नाम प्रदान कर दिया गया है तथा अधिकांश नागरिकों द्वारा सहज रूप से इसे स्वीकार भी कर लिया है। शिक्षा विभाग भी भ्रष्टाचार से अछूता नहीं रहा है। वह तो भ्रष्टाचार का केन्द्र बनता जा रहा है। प्रवेश से लेकर समस्त प्रकार की शिक्षा प्रक्रिया तथा नौकरी पाने तक, स्थानान्तरण से लेकर पदोन्नति तक भ्रष्टाचार का प्रभाव दिखाई देता है।

भ्रष्टाचार एक अभिशाप है और राजनीतिक भ्रष्टाचार सब भ्रष्टाचारों से बुरा है। शासन का शायद ही कोई हिस्सा हो जहां पर भ्रष्टाचार न पाया जाता हो। ''भ्रष्टाचार'' शब्द का अर्थ इसके नाम में ही छुपा है। भ्रष्टाचार यानी भ्रष्ट+आचार।

भ्रष्ट का अर्थ है बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का का अर्थ है आचरण। अर्थात भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो।

कौटिल्य के अनुसार– ''सरकारी सेवा में रहते हुए राजकीय धन में गबन नहीं करना उसी प्रकार असम्भव है जैसे कि जीभ पर रखे शहद या चीनी को न चखना।''[1]

भ्रष्टाचार के मापदण्ड की पद्धति

भ्रष्टाचार के स्तर को मापने के लिए जिस इण्डेक्स का प्रयोग किया जाता है उसमें 0 से लेकर 100 तक अंक दिये जाते हैं। जिस देश के नम्बर अधिक होते हैं, उसे कम भ्रष्टाचारी माना जाता है। कम नम्बर वाले देश अधिक भ्रष्टाचारी की सूची में गिने जाते हैं। जिस देश के नम्बर जीरो हैं तो उसे सबसे अधिक भ्रष्टाचारी माना जाएगा। किसी देश के नम्बर 100 है तो माना जाएगा कि वहां भ्रष्टाचार बिल्कुल नहीं है। ये नम्बर भी देश में विभिन्न विभिन्न क्षेत्रों के अध्ययन के बाद दिए जाते हैं।

''दुनिया की महाशक्ति कहा जाने वाला अमेरिका दुनिया के पहले पांच में भी नहीं है। वह लिस्ट में 27वें स्थान पर है। भारत की रेटिंग पिछले वर्ष भी 85 थी, इस वर्ष भी वहीं है। उसका स्कोर 40 है हालांकि फिलहाल आर्थिक संकट से जूझ रहा है। श्रीलंका 102वें स्थान पर है जबकि तालिबान के शासन वाला अफगानिस्तान 174वें स्थान पर है।''[2]

पिछले दशक में कालाधन विदेश भेजने के मामले में भारत का पांचवा स्थान रहा। ''वाशिंगटन स्थित रिसर्च संस्था ग्लोबल फाइनेंशियल इण्टीग्रिटी की रिपोर्ट के अनुसार 2002–2011 के बीच करीब 343.04 अरब डॉलर (करीब 21 लाख करोड़ रूपये) गैर कानूनी तरीके से देश से बाहर भेजे गए। अकेले वर्ष 2011 में देश का इस मामले में तीसरा स्थान था।''[3]

ऐसे अनेक कारण है जो भारत की अर्थव्यवस्था को निम्न स्तर की ओर ले जा रहा है जिसके कारण से भ्रष्टाचार की जड़े अत्यन्त गहरी हो चुकी हैं। मर्यादाएं धीरे–धीरे नष्ट हो रही हैं। सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार दीमक की तरह व्याप्त होकर व्यवस्था को खोखला किए जा रहा है।

भारत में भ्रष्टाचार की स्थिति

आज ढूँढे से भी एक नेता बेदाग नहीं मिलेगा। एक नौकरशाह आरोपमुक्त नहीं मिलेगा। यहां तक कि कोई महकमा घोटाले से मुक्त नहीं है। हमारी श्रद्धा अब हमारी लाचारी बन गयी है। चुनावी राजनीतिज्ञों ने गांधीवादी राजनीतिज्ञों की प्रजाति का सफाया कर दिया। इसने राजनीति में दाखिले की प्रणाली ही बदल दी। नतीजे के तौर पर एक नितान्त भिन्न ढंग का उत्पाद अस्तित्व में आया।

राजनीतिज्ञों की इस नस्ल को प्रेरित करने वाले मूल्य अलग ढंग के थे। समाज में कुछ लोग अब भी स्वतंत्रता आन्दोलन की परम्परा का पालन कर रहे हैं। ''सबसे पहले यह परिघटना 1952 के आम चुनावों में देखने को मिली। हालांकि वे चुनाव धूम–धड़ाके से नहीं लड़े गए थे।''[4] राजनीतिज्ञ को ऐसे कार्यकर्ताओं की आवश्यकता भी होती है जो चुनाव सभाएँ, टूटते सामाजिक ढाँचे, बर्बाद अर्थव्यवस्था, पंगु राजनैतिक व्यवस्था से किसी को कोई सरोकार नहीं है। आश्चर्य की बात यह है कि दिन के उजाले में यह प्रतीत नहीं होता किन्तु सतह के नीचे बहुत कुछ चलता रहता है। जैसे दिन में दीपक का प्रकाश नजर नहीं आता है लेकिन जैसे–जैसे रात्रि होने लगती है वैसे–वैसे ही दीपक का प्रकाश दिखाई देने लगता हैं भारत में भ्रष्टाचार पिछले कुछ वर्षों में कम जरूर हुआ है लेकिन भ्रष्टाचार देश से सम्पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हो पाया है।

''अन्तर्राष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठन ट्रांसपैरेंसी इन्टरनेशनल की वर्ष 2017 की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में भारत का भ्रष्टाचार में 81वां स्थान है।''[5] ''ट्रांसपैरेंसी इन्टरनेशनल की वर्ष 2022 की रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में भारत का भ्रष्टाचार में 85वां स्थान है।''[6]

भारत की प्रमुख समस्याओं में से भ्रष्टाचार एक है बल्कि एक सामाजिक अभिशाप भी है। यह देश के विकास के लिए प्रमुख चुनौती है। निःसंदेह आज भारत के सामने अनेक समस्याएँ हैं। उनमें से सबसे गम्भीर समस्या भ्रष्टाचार है। भारत को भ्रष्टज्ञचार अपनी विरासत ब्रिटिश साम्राज्य से आर्थिक शोषण में मिला है।

भारत में भ्रष्टाचार अब उस सीमा तक पहुंच चुका है जिससे प्रत्येक वर्ग और परिवार को नुकसान हुआ है। ''ट्रांसपैरेंसी इन्टरनेशनल इण्डिया के एक सर्वेक्षण के अनुसार बीपीएल परिवारों से वर्ष 2008 में भारत में 900 करोड़ रूपये का लेनदेन रिश्वत के तौर पर हुआ।''[7] यहां महान अंग्रेजी लेखक **शेक्सपीयर** द्वारा लिखित **''हेमलेट''** पुस्तक की कुछ पंक्तियाँ सही प्रतीत होती हैं। ''ईश्वरदत्त सद्गुण भी अब भ्रष्टाचार और आसक्तियों से बचा नहीं है। परजीवी कृमि पुष्प कलिकाओं को खिलने से पूर्व ही समाप्त कर देता है।''[8]

ये पंक्तियां भारतीय समाज पर भी सही प्रतीत होती दिखाई देती हैं। भारत की राजनीति, न्यायपालिका, सरकारी तन्त्र तथा मीडिया में परिवेष्टित भ्रष्टाचार भारत के लिए खतरनाक है। आज, जबकि नव–पूंजीवाद–शक्तिशाली, भारी

भरकम, ताकतवर होकर खड़ा है और समाज में अपना जहर चारो–तरफ फैला रहा है ठीक उसी प्रकार सरकार के अथक प्रयासों के फलस्वरूप भी भ्रष्टाचार के जहर का अंत होना नहीं दिखाई देता है। यह समस्या का एक नया दौर है। जो कि भ्रष्टाचार का एक मुख्य कारण भी बन गया है। अधिकाधिक राष्ट्र इसके शिकार हो रहे हैं और भ्रष्ट ताकतें अपना सिर ऊँचा उठाने लगी हैं। भारत का यह संकट अब हमारी गृह एवं विदेश नीतियों में भी स्पष्ट दिखाई देने लगा है। बात यहां तक पहुंच चुकी है कि धर्मनिष्ठ कार्य भी इस दूषित वातावरण की चपेट में आ गया है।

क्या यह कहना ठीक नहीं होगा कि समय बहुत अस्त–व्यवस्थ है, पर कौन है जो इसे व्यवस्थित कर सके।

पिछले कुछ वर्षों में हुए घोटालों पर एक नजर–

घोटाले	**रूपये**
बोफोर्स घोटाला	64 करोड़ रूपये
यूरिया घोटाला	233 करोड़ रूपये
चारा घोटाला	950 करोड़ रूपये
शेर बाजार घोटाला	4000 करोड़ रूपये
सत्यम घोटाला	24000 करोड़ रूपये
स्टैंप पेपर घोटाला	43000 करोड़ रूपये
कॉमनवेल्थ गेम्स घोटाला	70000 करोड़ रूपये
2जीं स्पेक्ट्रम घोटाला	1 लाख 76 हजार करोड़ रूपये
अनाज घोटाला	2 लाख करोड़ रूपये
कोयला खादान आँवटन घोटाला	12 लाख करोड़ रूपये

भ्रष्टाचार हमारे जीवन को भी विभिन्न–विभिन्न प्रकार से प्रभावित कर रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि आयोजित करने, भीड़ जुटाने और गलत कार्य करने में धन का गलत उपयोग करते हैं।

प्रशासन में भ्रष्टाचार

सार्वजनिक पदों पर बैठे लोग अपने काम को निजी लाभ एवं प्रगति का माध्यम मानते हैं। ये लोग आम नागरिक को अपना शिकार समझते हैं। उसे अपने शिकंजे में फँसाते हैं और उसका भरपूर दोहन करते हैं। मान लिया गया है कि घूस के रूप में भ्रष्टाचार कार्यकुशलता बढ़ाता है और यह भारी–भरकम विधि विधानों एवं विलम्बकारी विधि व्यवस्था से छुटकारा पाने का साधन है। राजनीति और धनशक्ति की सन्धि को तोड़ना भी बेहद आवश्यक है। इस सम्बन्ध में राज्य द्वारा प्रत्याशियों का चुनाव व्यय वहन करने के सुझावों पर गम्भीरता से विचार किया जा रहा है।

विधानसभा चुनाव में रिश्वत देने ही नहीं लेने वालों के खिलाफ भी कार्यवाही होगी। ऐसे लोगों के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज कराई जाएगी। रिश्वत के लेनदेन में रिटर्निंग ऑफिसरों को वस्तुओं को जब्त कर दोनों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई जाएगी। रिश्वत के लेनदेन में रिटर्निंग ऑफिसरों को वस्तुओं को जब्त कर दोनों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराते हुए, इसकी एक प्रति व्यय प्रेक्षक को भेजने के निर्देश दिए गए हैं। विधानसभा क्षेत्रों में मतदाताओं को प्रभावित करने वालों की निगरानी के लिए चुनाव आयोग की मशीनरी सक्रिय हो गयी है। आयोग ने इसकी निगरानी का जिम्मा केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर विभाग (सीजीएसटी) को सौंपा है। इन सबसे आवश्यक है प्रशासन को स्वच्छ बनाने के लिए राजनीतिक और प्रशासनिक प्रतिबद्धता। इसका कारण यह है कि पूरे वातावरण का निर्माण तो राजनीतिक अभिजात्य वर्ग ही करता है।

''भारतीय जनता पार्टी देश की सबसे अमीर राजनीतिक पार्टी है। 2019–2020 में पार्टी के पास बसपा से करीब सात तो कांग्रेस से आठ गुणा अधिक सम्पत्ति थी। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की रिपोर्ट के अनुसार 2019–20 में 4847.78 करोड़ रूपये की सम्पत्ति की घोषणा के साथ भाजपा शीर्ष पर रही, जबकि 698.33 करोड़ की सम्पत्ति के साथ बसपा दूसरे पायदान पर है। वहीं तीसरे नम्बर पर रही कांग्रेस ने कुल 588.16 करोड़ रूपये की सम्पत्ति की घोषणा की है।''[9]

क्षेत्रीय राजनीतिक दलों में सबसे अधिक 563.47 करोड़ रूपये की सम्पत्ति समाजवादी पार्टी के पास है यह कुल घोषित संपत्ति का 26.46 फीसदी है। दूसरे नम्बर पर 301.47 करोड़ रूपये की सम्पत्ति टीआरएस ने बताई है। तीसरे स्थान पर 267.61 करोड़ की सम्पत्ति एआईएडीएमके के पास है।

''एडीआर ने कुल सम्पत्ति को लेकर देश की सात राष्ट्रीय और 44 क्षेत्रीय पार्टियों की घोषणा के अध्ययन के बाद 29.01.2022 को यह रिपोर्ट जारी की थी। ''संथानम समिति की रिपोर्ट का निष्कर्ष था कि कन्ट्रोल और लाईसेंसों पर आधारित व्यवसथा ने राजनीति में मौजूदा अनैतिक तत्वों को धन–सम्पत्ति संचय के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध करायी हैं''[10] ऐसे तत्वों पर कठोर नियन्त्रण की आवश्यकता थी पर ऐसा नहीं किया गया। समिति ने इन शब्दों में अपना क्षोभ व्यक्त किा, सरकारें भ्रष्टाचार के खिलाफ थी पर वे व्यक्तियों के खिलाफ नहीं थीं, बशर्ते वे व्यक्ति पर्याप्त शक्तिशाली,

प्रभावशली और संरक्षण प्राप्त हैं।

''समिति ने 1964 में जो कहा था वह आज भी प्रासांगिक है। उसकी रिपोर्ट का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है, भ्रष्टाचार की समस्या काफी जटिल और नाजुक है..... इस बारे में व्यापक स्तर पर आम सहमति है कि सत्यनिष्ठा की नई परम्परा तभी स्थापित की जा सकती है, जब भारत की शासन व्यवस्था की बागडोर संभालने वाले यानी केन्द्र एवं राज्य के मंत्रीगण स्वयं को उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत करें।''[11]

भारत में भ्रष्टाचार सर्वव्यापी हो गया है जीवन का कोई भी क्षेत्र इसकी गिरफ्त से अछूता नहीं है। यह वर्तमान भारत में जीवनशैली बन चुका है। इसकी स्वीकार्यता सामाजिक क्रियाकलापों में स्पष्ट तौर पर परिलक्षित होती है। फुटकर कोशिशों से देश को इस बुराई से मुक्त नहीं कराया जा सकता क्या? इससे जूझने के लिए राष्ट्रव्यापी संकल्प की आवश्यकता है। इसके उन्मूलन के लए सुविचारित रणनीति तैयार कर उस पर अमल करना होगा।

भ्रष्टाचार को समाप्त करने हेतु आयाम

1. राजनीतिक मसलों में जनता की भी सहभागीदारी हो।
2. राजनीतिक काम के लिए लोकायुक्त/लोकपाल स्वतंत्र हो।
3. सरकारी कर्मचारियों का वेतन वर्तमान स्थिति के अनुसार हो।
4. कार्यालय में अधिकारी कम नहीं हों आवश्यकता से एक–दो अधिक हो।
5. समय–समय पर जनता को भ्रष्टाचार का विरोध भी करना चाहिए।
6. भ्रष्टाचार करने का सरकारी कर्मचारी या जनता स्वयं ही क्यों ना हो अधिक से अधिक दण्ड मिलना चाहिए।
7. चुनाव प्रणाली को आसान और न्यूनतम खर्चीला बनाना चाहिए।
8. डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के अनुसार प्रति दस वर्ष बाद विमुद्रीकरण की प्रक्रिया को किया जाना चाहिए।
9. क्रय–विक्रय अधिक से अधिक डिजीटल प्रक्रिया के द्वारा होना चाहिए।
10. शिक्षा के अभाव के कारण भारत में बढ़ता ही जा रहा है सरकार को शिक्षा के प्रति भी सजग होना चाहिए।

इस भ्रष्टाचार को रोकने के लिए हमें किसी नई नीति की आवश्यकता नहीं है। जरूरत है तो अपनी प्राथमिकताओं को लक्ष्यबद्ध करने की। उपभोक्तावादी संस्कृति से अलग हटकर अपने जीने का कारण तलाशना होगा। राष्ट्र, नागरिक और संस्कृति एवं सभ्यता की धरोहर हमारी प्राथमिकता सूची में सर्वोपरि होनी चाहिए। इस छोटे से बदलाव से हम समाज को कलंकित होने से बचा सकते हैं और यह बदलाव सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर पर नैतिक मूल्यों को महत्त्व देने के पश्चात् ही संभव हो सकता है।

आज भी अंग्रेजी के महान कवि **विलियम वर्डसवर्थ** की निम्न पंक्तियाँ प्रासंगिक लगती हैं–

''हम चीजों को सतह पर से ही देखते हैं
भीतर चीजें छिपी हुई हैं। समूचा जगत ही विष से भरा हुआ है''[12]

निष्कर्ष

यदि मैं पाश्चात्य विचारक **प्लेटों** की बात करूं तो प्लेटों में संरक्षक वर्ग के लिए सम्पत्ति और निजि परिवार समाप्त कर दिये क्योंकि इससे भ्रष्टाचार, पक्षपात, व्यक्तिगत व गुटबाजी पनपती है इसीलिए प्लेटों स्वयं कहता है कि सम्पत्ति व भ्रष्टाचार देश के विकास और प्रगति में बाधक बना हुआ है।

हेगेल जिस प्रकार हवा के बहने से समुन्द्र की गंध उड़ जाती है जोकि हवा के लम्बे काल तक शान्त रहने से पैदा हुई थी उसी प्रकार राष्ट्रों में जो भ्रष्टाचार है वह लम्बी व स्थायी शान्ति का नतीजा है।

आज भ्रष्टाचार हमारे देश भारत में पूरी तरह से फैल चुका है। भ्रष्टाचार ऐसा अनैतिक एवं भ्रष्ट आचरण है जिसमें व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए सत्ता–शक्ति का दुरूपयोग करते हैं दुनिया के बड़े देश भी अपने यहां कार्यरत धनी भारतीयों को देखकर इस बात से हैरान होते हैं कि अपार मानव संसाधन, शक्ति और प्राकृतिक सम्पदा के होते हुए भी भारत इतना निर्धन और भ्रष्ट देश क्यों है। इसका उत्तर यही है कि हम वस्तुतः गरीब नहीं हैं इसके लिए हमारी नीतियां और राजनीतिक व्यवस्था दोषी है।

भारत में आज लगभग सभी भ्रष्टाचार की पकड़ में हैं चाहे फिर वह कोई भी क्षेत्र क्यों न हो देश से भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए सरकार को प्रत्येक समय–सीमा पर विमुद्रीकरण करना चाहिए जैसा कि पहले डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी ने भी कहा था कि प्रत्येक 10 वर्ष बाद विमुद्रीकरण की प्रक्रिया की जानी चाहिए जिससे देश में बढ़ रहे भ्रष्टाचार को समाप्त किया जा सके। यह शोध पत्र प्रत्येक वर्ग के लिए अति आवश्यक होगा जो एक मार्ग दर्शन का कार्य भी करेगा।

संदर्भ सूची

1. जी0एल0 शर्मा, सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ 208
2. एस0आर0 दास आयोग रिपोर्ट, 1964

3. www.freejankari.com
4. www.successeds.net
5. भ्रष्टाचार की जड़ों पर प्रहार जरूरी, दिल्ली पत्रिका, 12 नवम्बर 2016
6. अमर उजाला, 17 जनवरी, 2022 पृष्ठ 10
7. के0 संथानम, भ्रष्टाचार निरोधक समिति रिपोर्ट, 1964
8. मोहित भट्टाचार्य, लोक प्रकाशन के नये आयाम, 2006, पृष्ठ 65
9. अमर उजाला, 26 जनवरी, 2022 पृष्ठ 04
10. अमर उजाला, 29 जनवरी, 2022 पृष्ठ 02
11. के0 संथानम, भ्रष्टाचार निरोधक समिति रिपोर्ट, 1964
12. एस0आर0 माहेश्वरी, भ्रष्टाचारः समाज का कैंसर, पॉलिटिक्स इण्डिया, 1998, पृष्ठ 14